जब आप सहमत नहीं हो सकते (15:35-41)

प्रेरितों के काम 15 का अन्त कुछ आश्चर्यजनक ढंग से होता है। पाठ के ज्यादातर भाग में, पौलुस और बरनबास कलीसिया को फूट से बचाने के लिए नि:स्वार्थ ढंग से कलीसिया के झगड़ों को निपटाते रहे। फिर, अन्तिम आयतों में हम पढ़ते हैं कि पौलुस और बरनबास व्यक्तिगत मतभेदों को नहीं मिटा सके और एक दूसरे से अलग हो गए!

यदि लूका के स्थान पर मैं होता तो यह प्रभाव छोड़ने के लिए भ्रमित हो जाता कि पौलुस और बरनबास में ''बहुत झगड़ा हुआ।'' मैं कहता कि जब उन्होंने पहली यात्रा में स्थापित कलीसियाओं के पास दोबारा जाने का निर्णय लिया, तो उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि वे एक के बजाय दो दल बना लें तो इससे दोगुना लाभ और काम होगा और उन्होंने ऐसा ही किया। लूका इस प्रलोभन में नहीं आया। न केवल बाइबल के पात्रों, बल्कि बाइबल के नायकों को भी हम सामान्य की भान्ति ही चित्रित किया देखते हैं, वैसे नहीं जैसे उनको होना चाहिए था।

लूका ने पौलुस और बरनबास के झगड़े को दर्ज क्यों किया? यकीनन ही यह किसी व्यक्ति को शर्मिंदा करने के लिए नहीं था, [1] बल्कि भाइयों को इस घटना से यह सिखाने के लिए था कि झगड़े को कैसे निपटाया जाए। पिछले दो पाठों में, हमने कलीसिया में उत्पन्न विवादों को हल करने की चर्चा की। परन्तु, कई बार हमें लगता नहीं है कि जो समस्या उठी है, उसका हल हो जाएगा। हमें फिर क्या करना चाहिए? इस पाठ में कुछ उत्तर दिए गए हैं।

एक गर्मागर्म बहस

एक सुझाव दिया जाता है (15:35, 36)

आइए कहानी को दिमाग में रखकर आरम्भ करते हैं। हमारा पिछला पाठ 15:35 के साथ समाप्त हुआ था: ''और पौलुस और बरनबास अन्ताकिया में रह गए: और बहुत और लोगों के साथ प्रभु के वचन का उपदेश करते, और सुसमाचार सुनाते रहे।'' हम नहीं जानते कि वे यरूशलेम की सभा के बाद अन्ताकिया में कितने समय तक रहे। सम्भवत:, पौलुस ने गलतिया के मसीहियों को पत्र इसी दौरान लिखा। गलतियों 2:11-16 की घटना जब पौलुस को अन्यजातियों से आए भाइयों[2] के साथ खाना छोड़ने पर पतरस को डांटना पड़ा, भी शायद इसी समय घटी हो सकती है। यदि ऐसा है, तो गलतियों 2 में एक वाक्यांश

हमारे अध्ययन के लिए महत्वपूर्ण हो जाता है: ''और उसके साथ शेष यहूदियों ने भी कपट किया, *यहां तक कि बरनबास भी* उन के कपट में पड़ गया'' (गलतियों 2:13)। पौलुस अवश्य ही बरनबास के व्यवहार से निराश हुआ होगा और उसे गहरा आघात लगा होगा। इससे हमें बहुत सम्भावना दिखाई देती है कि प्रेरितों 15:36-39 की घटनाओं से पहले ही पौलुस और बरनबास की मित्रता में तनाव था।

अन्ताकिया में इकट्ठे काम करने के बाद पौलुस ने निर्णय लिया कि फिर से काम करने के लिए निकला जाए। हम पढ़ते हैं, कि ''कुछ दिन बाद[3] पौलुस ने बरनबास से कहा; कि जिन-जिन नगरों में हम ने प्रभु का वचन सुनाया था, आओ, फिर उन में चलकर अपने भाइयों को देखें, कि कैसे हैं'' (15:36)। बपतिस्मा देकर हम लोगों को नज़रअन्दाज नहीं कर सकते: ''ग्रेट कमीशन अर्थात महान आज्ञा का ऐलान है कि जब तक हम नये मसीहियों का पालन पोषण नहीं करते, तब तक हम खोए हुए लोगों तक सुसमाचार ले जाने के लिए तैयार नहीं हैं।''[4] बहुत से पूर्व मिशनरी समय-समय पर उन क्षेत्रों में जाते हैं जहां पर उन्होंने लोगों को बपतिस्मे दिए थे, ताकि वे उन आत्माओं का पालन-पोषण कर सकें।

पौलुस के कार्यक्रम का उद्देश्य (कम से कम एक ही बात जिसका उल्लेख है) पहले स्थापित की गई कलीसियाओं को दृढ़ करना था। गलतियों की पत्री से संकेत मिलता है कि वह यहूदी शिक्षा देने वालों के प्रति चिन्तित था, जिससे अन्ताकिया की कलीसिया में गड़बड़ी फैल गई थी। जैसे हम देखेंगे, कि केवल वहां जाने से ही उनमें सुसमाचार के प्रयास के लिए महत्वपूर्ण बदलाव आया।

मतभेद उभरता है (15:37-39क)

बरनबास को पौलुस का सुझाव पसन्द था परन्तु उसने अपना भी सुझाव जोड़ दिया: ''तब बरनबास ने यूहन्ना को जो मरकुस कहलाता है, साथ लेने का विचार किया'' (आयत 37)। आपको याद होगा कि यूहन्ना मरकुस ने, जो बरनबास का चचेरा भाई था (कुलुस्सियों 4:10), पौलुस और बरनबास की प्रथम यात्रा में उनका साथ दिया था, परन्तु पंफूलिया के पिरगा में वह उन्हें छोड़ कर चला गया था (13:13)।

दूसरी यात्रा में बरनबास ने मरकुस को अपने साथ ले जाने की इच्छा क्यों की? शायद मरकुस ने बरनबास से क्षमा मांगी होगी: ''मैं शर्मिंदा हूं कि मैं छोड़कर चला गया था। मैं जानता हूं कि मैं गलत था, परन्तु मुझे एक और अवसर दें। मैं वायदा करता हूं कि इस बार मैं आपको शर्मिंदा नहीं होने दूंगा।'' कारण कुछ भी हो, शांति के पुत्र ने मरकुस को एक और अवसर देने में प्रसन्नता जताई।

पौलुस प्रसन्न *नहीं* था। उसे यकीन नहीं हो रहा था कि मरकुस इतना परिपक्व हो चुका है कि उसे दोबारा साथ लेने का जोखिम उठाया जाए। इसलिए, ''पौलुस ने उसे जो पंफूलिया में उन से अलग हो गया था, और काम पर उन के साथ न गया, साथ ले जाना अच्छा न समझा'' (15:38)। ''अच्छा न समझा'' शब्द निरन्तर क्रिया की ओर संकेत करता है।[5] बरनबास कहता रहा कि उन्हें मरकुस को साथ ले लेना चाहिए, जबकि पौलुस

कहता रहा कि उन्हें उसे साथ नहीं लेना चाहिए। हमें उनकी बातचीत तो नहीं बताई गई परन्तु उसकी कल्पना करना कठिन नहीं है।[6]

बरनबास: ''मुझे लगता है कि हमें मरकुस को एक और अवसर देना चाहिए।''

पौलुस: ''नहीं। प्रभु ने कहा है, 'जो कोई अपना हाथ हल पर रखकर पीछे देखता है, वह परमेश्वर के राज्य के योग्य नहीं' [लूका 9:62][7]।''

बरनबास: ''उसने यह भी तो कहा है, कि 'धन्य हैं वे, जो दयावंत हैं, क्योंकि उन पर दया की जाएगी' [मत्ती 5:7]।''

पौलुस: ''यह यात्रा आसान नहीं होगी, और हमें अपने साथ जाने वाले हर एक व्यक्ति पर निर्भर होना आवश्यक है। बुद्धिमान ने कहा है, कि 'विपत्ति के समय विश्वासघाती का भरोसा टूटे हुए दांत व उखड़े हुए पांव के समान है' [नीतिवचन 25:19]।''

बरनबास: ''यदि तुम शास्त्र में से ही बताना चाहते हो, [8] तो दाऊद, योना और अन्यों की कहानियों को मत भूलो। यदि परमेश्वर ने लोगों को दूसरा अवसर दिया है, तो हम क्यों न दें?''

पौलुस: ''बरनबास अगर तुम्हारा भाई न होता तो तुम उसकी सिफारिश न करते!''

बरनबास: ''तुम तो मेरे भाई नहीं हो, परन्तु यरूशलेम में मैंने तुम्हारी भी सिफारिश की थी,[9] याद है?''

आयत 39 कहती है कि उनके बीच *''... ऐसा टंटा हुआ।''* हिन्दी और यूनानी दोनों भाषाओं में, लगता है कि उन में बहुत गर्मागर्म बहस हुई। शायद वे आपे से बाहर होकर एक दूसरे को बुरा-भला कहने लगे। पौलुस ने बाद में लिखा, कि ''प्रेम धीरजवंत है ... झुंझलाता नहीं ...'' (1 कुरिन्थियों 13:4, 5)। ये शब्द लिखते हुए, कुछ वर्ष पूर्व अपने मित्र के साथ कहासुनी होने की बात को याद करके वह थोड़ा सा शर्मिंदा तो हुआ होगा। यकीनन ही, यहां पर पौलुस झुंझलाया नहीं!

समाधान का प्रयास होता है (15:39ख-41)

कुछ देर के बाद, यह स्पष्ट हो गया कि पौलुस और बरनबास कम से कम कुछ देर के लिए अपने मतभेद दूर नहीं कर सके। उन्होंने उन कलीसियाओं में जो स्थापित हुई थीं, में जाने के कार्य को बांटने का निर्णय लिया। क्योंकि बरनबास कुप्रुस का रहने वाला था (4:36) इसलिए उसने वहां का काम पूरा करना था,[10] और पौलुस ने एशिया माइनर में जाना था। आयत 39ख कहती है ''कि वे एक दूसरे से अलग हो गए: और बरनबास, मरकुस को लेकर जहाज़ पर कुप्रुस को चला गया।'' प्रेरितों के काम में बरनबास के बारे हम यहां अन्तिम बार पढ़ते हैं। हमारी तरह बरनबास में भी कमियां होने के बावजूद वह कुल मिलाकर बहुत अच्छा मसीही था! कलीसिया में हमें शांति के और पुत्रों की आवश्यकता है!

बरनबास और पौलुस के अलग होने पर, प्रकाशबिन्दु पौलुस पर रहा: ''परन्तु पौलुस ने सीलास को चुन लिया, और भाइयों से परमेश्वर के अनुग्रह पर सौंपा जाकर वहां से

चला गया। और कलीसियाओं को स्थिर करता हुआ, सूरिया और किलिकिया से होते हुए निकला'' (आयतें 40, 41)।

कुछ निष्कर्ष

रुक कर अनुमान लगाना अच्छा लगता है कि पौलुस और बरनबास ने क्या किया होगा और उनको क्या करना चाहिए था। यह सोचना कठिन नहीं है कि यदि उन्होंने हमारे पिछले दो पाठों में दिए गए सुझावों को मान लिया होता, तो हो सकता है उन्होंने अपने मतभेद दूर कर लिए हों। फिर भी, जो कुछ वहां हुआ, लूका ने उसका केवल संक्षिप्त निष्कर्ष ही दिया और हमारे लिए वह जानकारी नहीं दी जिससे हम अपना निर्णय दे सकें। इसलिए, मैं भाइयों के बीच मतभेदों के सम्बन्ध में कई बुनियादी सच्चाइयों को इस कहानी में से निकालने के लिए अपने आपको सीमित ही रखूंगा:

(1) *भाई, बल्कि अच्छे भाई भी कभी-कभी आपस में असहमत हो जाते हैं और असहमत होते रहेंगे।*[11] पौलुस और बरनबास दोनों भले व्यक्ति थे, परन्तु वे असहमत थे। किसी ने कहा है कि यदि दो लोग एक बात पर सहमत हों, तो उन में से एक की कोई आवश्यकता नहीं। जब तक असहमति नियन्त्रण से बाहर नहीं हो जाती (हम पौलुस और बरनबास के बीच हुए ''टंटे'' के लिए उनकी प्रशंसा नहीं कर सकते) और असहमति निर्णय देने के विषयों पर है तब तक असहमति में कुछ भी गलत नहीं है।[12]

(2) *असहमति की अधिकांश बातों में, दोनों पक्षों में कुछ सही होता है और कुछ गलत।* जब हम पौलुस और बरनबास की असहमति की कहानी का अध्ययन करते हैं, तो निरपवाद रूप में हम यह प्रश्न पूछते हैं ''उन में सही कौन था, और गलत कौन था?'' एक व्यक्ति कहता है, ''मेरे विचार से पौलुस सही था। मैं उसकी स्थिति से गुजर चुका हूं और मैं कहता हूं कि टूटे हुए तिनके का सहारा नहीं लिया जा सकता!'' कोई और जवाब देता है, ''नहीं। बरनबास सही था क्योंकि मरकुस प्रभु के लिए एक महान कार्यकर्त्ता बन गया था!'' लूका यह नहीं कहता कि कौन सही था और कौन गलत। यह तथ्य कि अन्ताकिया के भाइयों ने पौलुस और सीलास को औपचारिक विदाई दी (आयत 40) संकेत देता है कि उन्होंने पौलुस का पक्ष लिया (कम से कम यह कि उन्होंने उसकी स्थिति के लिए उसे गलत नहीं ठहराया), परन्तु यह अनिर्णायक है।

असहमति को नियन्त्रण से बाहर जाने देने में दोनों की गलती थी। एक और अर्थ में, दोनों सही थे; पौलुस और बरनबास विषय को दो विभिन्न दृष्टिकोणों से देख रहे थे। पौलुस ने यूहन्ना मरकुस को साथ ले जाने की बात को मिशन के दृष्टिकोण से देखा; बरनबास ने उसे मनुष्य के दृष्टिकोण से देखा। पौलुस को भय था कि मरकुस को ले जाने से टीम के अन्य सदस्य निरुत्साहित होंगे और उससे मिशन कार्य संकट में पड़ जाएगा।[13] बरनबास को भय था कि मरकुस को *न* ले जाने से वह निरुत्साहित होगा और मनुष्य संकट में पड़ जाएगा वारेन डब्ल्यू. वियर्सबे ने, *द बाइबल एक्सपोज़िशन कमैंट्री* में कहा है कि ''पौलुस ने लोगों की ओर देखा और पूछा, 'ये परमेश्वर के काम के लिए क्या कर सकते हैं?'

जबकि बरनबास ने लोगों की ओर देखा और पूछा, 'परमेश्वर का काम उनके लिए क्या कर सकता है?' '' प्रभु के कार्य में *दोनों* ही दृष्टिकोणों की आवश्यकता है।

कहते हैं कि ''जब दो लोग असहमत हों, तो दोनों ही सही नहीं हो सकते। उन में से एक सही होगा और दूसरा गलत, या दोनों ही गलत होंगे, परन्तु दोनों सही नहीं हो सकते।'' बाइबल के अनुसार, यह सिद्धांत शिक्षा की बातों के विषय में सत्य होगा, परन्तु यह विचार की बातों में सत्य नहीं होगा। यदि हम व्यक्तिगत पहल की बातों में दूसरों के असहमत होने के अधिकार को मान लें और इस सम्भावना को स्वीकार कर लें कि दूसरे भी सही हो सकते हैं तो हमारे सम्बन्ध बहुत मज़बूत हो सकते हैं![14]

(3) *कई बार, बहुत से प्रयासों के बावजूद, एक बात पर सहमत होने के सभी प्रयास असफल हो जाते हैं, और भाइयों को ''असहमति से सहमत'' होना पड़ता है।* हम चाहते तो हैं कि ऐसा न हो, किन्तु हो जाता है। ऐसा हो जाए तो यह संसार का सबसे बड़ा दुखांत नहीं है, यदि दोनों पक्ष वैसा ही आचरण करते हैं जैसा उन्हें करना चाहिए तो जरूरी नहीं कि इससे मित्रता समाप्त हो जाए।

(4) *तब भी जब विश्वासी भाई सहमत नहीं हो सकते, उन्हें मसीहियों की तरह कार्य करना चाहिए*। जब दृढ़ निश्चय वाले भाई मतभेदों की चर्चा कर रहे हों तो इफिसियों की कलीसिया को पौलुस का उपदेश पढ़ना चाहिए:

> क्रोध तो करो, पर पाप मत करो: सूर्य अस्त होने तक तुम्हारा क्रोध न रहे। ...कोई गन्दी बात तुम्हारे मुंह से न निकले, पर आवश्यकता के अनुसार वही जो उन्नत्ति के लिए उत्तम हो, ताकि सुनने वालों पर अनुग्रह हो... सब प्रकार की कड़वाहट और प्रकोप और क्रोध, और कलह, और निन्दा सब बैर-भाव समेत तुम से दूर की जाए। और एक दूसरे पर कृपाल, और करुणामय हो... (इफिसियों 4:26, 29, 31, 32)।

किसी ने कहा है, ''हम अप्रिय हुए बिना असहमत हो सकते हैं।''

पौलुस और बरनबास जब आपस में सहमत नहीं हो सके? तो उन्होंने किस प्रकार का व्यवहार किया। पहला, उन्होंने प्रभु की सेवा करनी नहीं छोड़ी। अधिकतर यह देखा जाता है कि एक भाई दूसरे भाई से परेशान हो जाता है और उसे प्रभु के पास ले जाता है। दूसरा, उन्होंने एक दूसरे के प्रभाव को नष्ट करने की कोशिश नहीं की। हमें ऐसा कोई संकेत नहीं मिलता कि पौलुस ने बरनबास के विश्वास में दृढ़ता के विषय में प्रश्न पूछने के लिए गलतिया में पत्र बांटे हों, या फिर बरनबास ने कुप्रुस से आने वालों के हाथ पौलुस के तरस की भर्त्सना करते हुए कोई पत्र भेजा हो। तीसरा, उनमें कोई दुर्भावना नहीं थी। क्योंकि उनमें ऐसा कुछ भी नहीं था, इसलिए सम्भवत: समय ने उनमें पड़ी दरार को भर दिया था। पौलुस ने कुरिन्थियों को लिखते हुए बरनबास का हवाला दिया (1 कुरिन्थियों 9:6)। इस हवाले से लगता है कि उनमें कोई दुर्भावना नहीं थी; इससे यह भी संकेत मिल सकता है कि वे बाद में फिर से मिलकर काम करने लगे।[15] परमेश्वर इसमें हमारी सहायता करे कि जब किसी भाई के साथ हमारी असहमति हो जाए तो हम पौलुस और बरनबास से सीख लें!

(5) *यदि हम अपना आचरण मसीहियों जैसा रखते हैं, तो परमेश्वर हमारी कमियों को दूर कर सकता है और उस असहमति से भलाई उत्पन्न कर सकता है।* पौलुस और बरनबास की असहमति का तत्काल परिणाम यह था कि एक नहीं बल्कि दो समूह प्रचार के लिए निकले। यह सुझाव देना गुस्ताखी होगी कि सारे प्रकरण में मिशन क्षेत्र में जाने के लिए दो टीमों को पवित्र आत्मा ने स्वयं तैयार करवाया, परन्तु यह सुझाव देना गलत नहीं होगा कि परमेश्वर ने असहमति दूर कर दी और उसमें से भलाई निकाली (रोमियों 8:28) मिशन क्षेत्र में, मैंने कई बार पौलुस/बरनबास की असहमति को देखा है, दोनों इकट्ठे काम करने के योग्य नहीं थे, सो वे इस बात पर सहमत हो गए कि उन्हें अलग-अलग क्षेत्रों में काम करना चाहिए। अधिकतर, अलग होने वाला व्यक्ति सहानुभूति रखने वाला होता है और अन्त में परिणाम यह होता है कि एक के बजाय दो मण्डलियों की स्थापना हो जाती है और दोनों मण्डलियां आपस में पूरी संगति रखती हैं।

क्योंकि पौलुस और बरनबास अपने मतभेदों के बावजूद परमेश्वर की सेवा करते रहे, इसलिए उसके दूरगामी परिणाम भी सकारात्मक थे। दोनों को अपने प्रयासों में परमेश्वर की ओर से आशीष मिली। अगले कुछ पाठों में, हम पौलुस की दूसरी मिशनरी यात्रा पर अध्ययन करेंगे। पौलुस और उसकी नई टीम के कर्मचारियों के लिए रोमांचपूर्ण और फलदायक दिन आने वाले थे। उसी समय, मरकुस की सहायता करने के बरनबास के प्रयास प्रभु के सेवक के रूप में उसकी पूरी सामर्थ का अहसास दिलाते हैं। बाइबल के बाहर की एक परम्परा के अनुसार, मरकुस मिसर में सिकन्दरिया में गया और वहां उसने काम आरम्भ किया। यह सत्य है या नहीं, परन्तु हम केवल इतना ही जानते हैं कि बाद में मरकुस पौलुस का एक सहकर्मी बन गया था (1 पतरस 5:13) और उसने मरकुस के नाम से प्रचलित सुसमाचार का भाग लिखा। अन्ततः, वह पौलुस के साथ मिल गया। मरकुस रोम में पौलुस के पहले कारावास के समय उसके साथ था। पौलुस ने उसे ''परमेश्वर के राज्य के लिए'' अपना सहकर्मी और ''शांति का कारण'' कहा (कुलुस्सियों 4:10, 11; फिलेमोन 24 भी देखिए)। फिर भी, दूसरे कारावास के दौरान अपनी मृत्यु से कुछ समय पहले तीमुथियुस द्वारा पौलुस की बिनती बहुत कुछ प्रकट करती है: ''केवल लूका मेरे साथ है, मरकुस को लेकर चला आ; क्योंकि सेवा के लिए वह मेरे बहुत काम का है'' (1 तीमुथियुस 4:11) एक समय था जब पौलुस को लगता था कि मरकुस उसके लिए व्यर्थ है; किन्तु बाद में उसने पाया कि वह उसके लिए उपयोगी है। (क्या यह अद्‌भुत बात नहीं कि परमेश्वर त्रुटिपूर्ण लोगों से काम ले सकता है?)

सारांश

मैंने एक बार दो बहनों के बारे में पढ़ा था जिनमें बहुत देर पहले थोड़ी सी असहमति हो गई थी (उनमें से किसी को भी याद नहीं कि यह असहमति किस बात पर हुई थी)। वे एक ही घर में रहती तो थीं, परन्तु उन्होंने वर्षों तक एक दूसरे से बात नहीं की थी। उन्होंने अपने घर को दो भागों में बांटने के लिए चाक से दरवाज़ों व चूल्हे के मध्य एक

लकीर खींच दी। वे एक ही रसोई में खाना बनातीं, एक ही मेज़ पर खाना खातीं, एक ही बिस्तर पर सोतीं। रात को वे एक दूसरे के खर्राटों को सुन सकती थीं, परन्तु आपस में बात नहीं करती थीं।

''कितनी बुरी बात है,'' आप कहेंगे, परन्तु, पूरी दुनिया में, परिवारों, समाजों, और यहां तक कि कलीसियाओं ने भी अपने मध्य चाक से एक रेखा खींची हुई है। नहीं, मैं उस दिखाई देने वाली रेखा की बात नहीं कर रहा, मैं तो मनों पर बनाई गई रेखाओं की बात कर रहा हूं। मैं उन लोगों की बात कर रहा हूं जो दूसरे लोगों के साथ अतीत में हुई असहमतियों के कारण किसी प्रकार का कोई मेल जोल नहीं रखते। यदि आप अपने आप को उस परिस्थिति में पाएं, तो मेरा आपसे आग्रह है कि चाक से खींची गई उन रेखाओं को मिटाने के लिए आप जो कुछ भी कर सकते हैं, कीजिए! ''जहां तक हो सके, तुम अपने भरसक प्रयासों से सब मनुष्यों के साथ मिलाप रखो'' (रोमियों 12:18)।

आइए इस पाठ को व्यक्तिगत और सम्भव बनाएं: क्या यह सम्भव है कि आपका किसी के साथ बहुत गंभीर झगड़ा हुआ है? आप किस प्रकार का व्यवहार कर रहे हैं? ध्यान दें कि मैंने यह नहीं पूछा, कि ''वह कैसा व्यवहार कर रहा/रही है?'' बल्कि मैंने पूछा कि, ''आप कैसा व्यवहार कर रहे हैं?'' उस गलतफहमी को दूर करने के लिए *आप* क्या कर सकते हैं? यदि इस वक्त किसी भाई के साथ आपकी कोई असहमति है, तो कृपया उस सम्बन्ध में प्रार्थना के लिए समय निकालें। परमेश्वर के सामने अपने पापों का अंगीकार करें कि वह आपको उस मुश्किल से निकलने के लिए बुद्धि और विनम्रता दे, और उससे प्रार्थना करें कि उस भाई के प्रति आपके विचारों को सुधारने के लिए आपका व्यवहार बदल जाए।[16]

प्रवचन नोट्स

आप इस पाठ का शीर्षक ''चाक की लकीरों को मिटा दें'' रख सकते हैं! परिचय में, उन दो बहनों की कहानी के साथ आरम्भ करें जिन्होंने अपने घर के बीच चाक से एक लकीर खींची थी। पाठ को दो भागों में बांट लें: (1) ''चाक से लकीरें खींचना'' (15:35-39क) और (2) ''चाक की लकीरों को मिटाना'' (15:39ख-41)। प्रथम शीर्षक के नीचे, आप ''कुछ निष्कर्ष'' से पहले वाक्य का प्रयोग कर सकते हैं। (देखिए पृष्ठ 176।) दूसरे शीर्षक के नीचे आप उस भाग के बाकी सुझावों में से कुछ का इस्तेमाल कर सकते हैं।

पाद टिप्पणियां

[1]जब लूका ने प्रेरितों के काम की पुस्तक लिखी तब तक बरनबास सम्भवत: जीवित था, और निश्चय ही पौलुस भी। [2]गलतियों की पत्री पर कोई प्रामाणिक कमैंट्री देखिए। [3]सुझाव दिया गया है कि पौलुस और बरनबास ने सर्दी के समय अन्ताकिया में काम किया, जब यात्रा करना कठिन था, और पौलुस का निर्णय बसंत ऋतु में आया जब एक बार फिर से यात्रा करना सम्भव था। नि:संदेह पौलुस के निर्णय में पवित्र आत्मा का बड़ा योगदान था। [4]''सब काम जो परमेश्वर ने किए थे'' वाले पाठ से उद्धृत किया गया है। [5]मूल भाषा में यह निरन्तर क्रिया थी। [6]इस विचार का सुझाव रिक ऐचले द्वारा एक काल्पनिक बातचीत से दिया गया है। [7]निश्चय ही, उन्होंने हवालों के लिए अध्यायों और आयतों को उद्धृत नहीं किया होगा, क्योंकि शास्त्र का यह विभाजन उनके समय नहीं हुआ था। [8]उस समय तक, उनका शास्त्र (आत्मा की प्रेरणा से लिखी गई बातें) पुराना नियम ही था। [9]प्रेरितों 9:26, 27। [10]यदि पौलुस और बरनबास को कुप्रुस में बहुत जगहों पर ग्रहण किया गया या उन्होंने वहां कोई मण्डली स्थापित की, तो लूका ने उस तथ्य को दर्ज नहीं किया (''प्रेरितों के काम, भाग-3'' में प्रेरितों 13:6 पर नोट्स देखिए)। शायद बरनबास उन लोगों के साथ जिनसे उसका सम्पर्क हुआ था, आगे मेल-जोल बढ़ाने के लिए गया।

[11]विशेष रूप से यह इसलिए सत्य है कि तुम में से जब दो दृढ़-निश्चय वाले व्यक्ति मिलकर काम करेंगे तो कुछ न कुछ असहमति तो होगी और (मुझे आशा है कि आप चौंकेंगे नहीं) प्रचारकों का दृढ़-निश्चय वाले व्यक्ति होना आवश्यक है। जो प्रचारक दृढ़-निश्चय वाले नहीं होते वे आम तौर पर प्रचारक होने के अनुचित लाभ लेने से पिस जाते हैं और प्रचार करना छोड़ देते हैं। [12]हमें बुनियादी शिक्षा पर सहमत होना चाहिए (1 कुरिन्थियों 1:10), किन्तु फैसला लेने की बातों पर सहमत होने की आवश्यकता नहीं (रोमियों 14)। [13]काम आसान नहीं होना था (गलतिया में झूठे शिक्षकों का सामना करना और फिर उस क्षेत्र के आगे उनके लिए जो भी काम करने की परमेश्वर ने योजना बनाई थी) और पौलुस ने सोचा होगा कि मरकुस फिर से छोड़कर जा सकता है। [14]इससे बहुत से वैवाहिक सम्बन्धों में सुधार आता। [15]बरनबास दूसरी यात्रा के अन्त के निकट पौलुस के साथ कुरिन्थुस में मिला होगा (प्रेरितों 18), परन्तु ऐसा लगता नहीं। फिर भी, उसने कुरिन्थुस या उसके निकट काम किया होगा; वरन, पौलुस द्वारा बरनबास का वेतन न लेने की बात का कोई अर्थ होता। [16]यदि यह पाठ क्लास में या प्रवचन के रूप में इस्तेमाल किया जाता है, तो शिक्षक या किसी और की प्रार्थना के बाद इस समय को शांत होकर प्रार्थना के लिए रखा जा सकता है। फिर भी, यदि हमने अपनी समस्याओं का समाधान इन बातों के अनुसार नहीं किया तो हमें दूसरों से मेल करने की इच्छा नहीं करनी चाहिए।

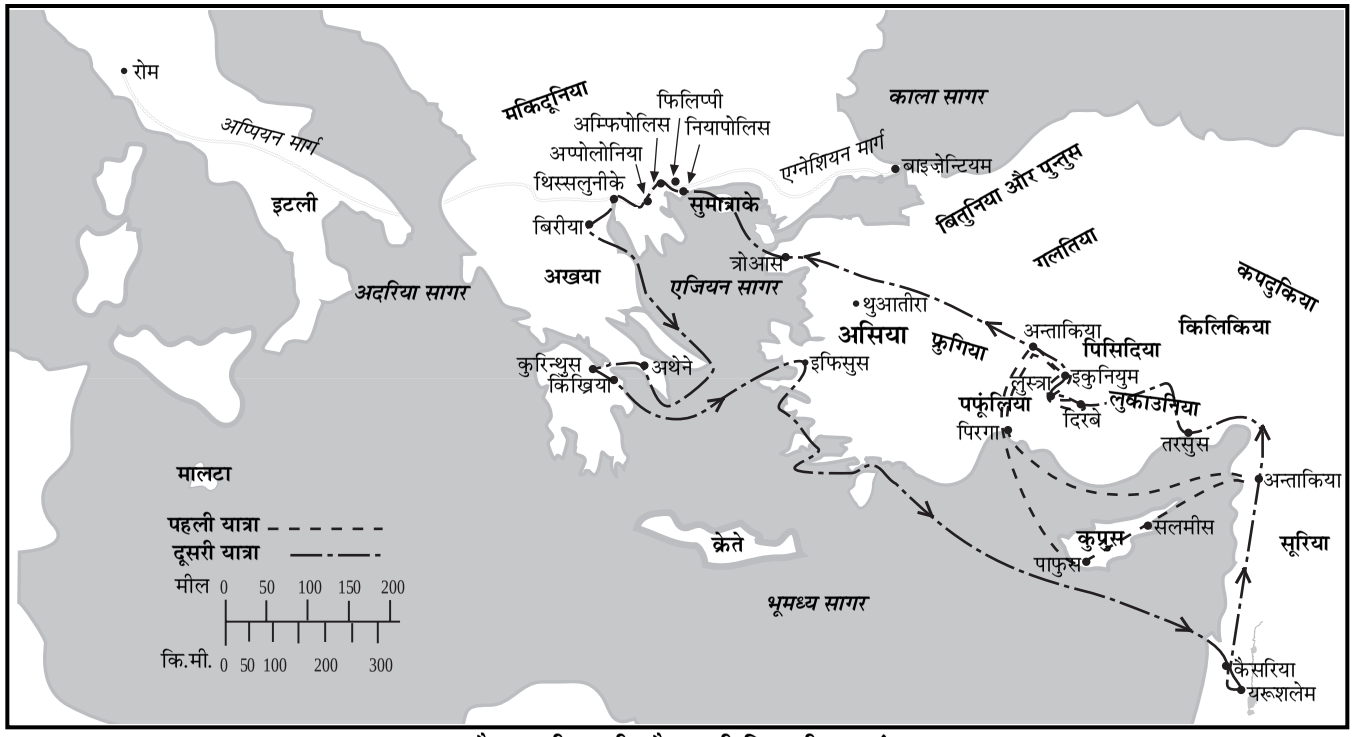

पौलुस की पहली और दूसरी मिशनरी यात्राएं